सोपी ने कहा, " जी, कुछ नहीं। "

सिपाही बोला, " कुछ नहीं ? तो मेरे साथ चलो। "

दूसरे दिन सवेरे पुलिस कोर्ट के मैजिस्ट्रेट साहब ने फरमाया, " तीन महीने की सख्त कैद। "

एक पीले कुत्ते के संस्मरण

मुझे आशा है कि एक जानवर के द्वारा लिखा गया यह लेख पढ़ कर आप चौकेंगे नहीं। किपलिंग महोदय ने और दूसरे कई लेखकों ने इस बात को भली भाँति सिद्ध कर के दिखा दिया है कि जानवर भी लाभदायक भाषा में अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं और आजकल तो, उन पुराने मासिक पत्रों के सिवाय जो अभी तक ब्रियान और मोण्ट पेली की जासूसी तस्वीरें छापते हैं, शायद ही कोई अखबार जानवरों की कहानी बिना प्रेस में जाता हो।

जंगलों से सम्बन्धित पुस्तकों में मिलने वाला परम्परागत साहित्य आपको इस लेख में नहीं मिलेगा – जैसे भलुवा भालू, संपिया साँप या शेरिया शेर की कहानी।

एक पीले कुत्ते से, जिसने अपना अधिकांश जीवन, न्यूयार्क के एक सस्ते फ़्लैट के कोने में सैटिन के किसी पुराने पेटीकोट पर पड़े पड़े बिताया हो (जिसे मालकिन ने श्रीमती लॉंगशोरमेन की दावत में शराब गिर जाने के कारण कोने में फेंक दिया था), वाक्चातुर्य दिखाने की आशा नहीं की जा सकती।

मेरा जन्म एक पीले पिल्ले के रूप में हुआ। तारीख, स्थान, वजन और नस्ल–अज्ञात। मेरे जीवन की सबसे पहली याद यह है कि ब्राडवे और २३ वीं सड़क के नुक्कड़ पर एक औरत मुझे टोकरी में रखे हुए, किसी मोटी महिला के हाथों बेचने की कोशिश कर रही थी। मेरी मालकिन मुझे एक

असली पोमेरेनियन – हैम्बलटोनियन – आयरिश – कोचीन – चायना – स्टाक पोज़र – फाक्स टैरियर नस्ल का कुत्ता प्रमाणित करने का झूठा दिखावा कर रही थी। वह मोटी महिला अपने थैले में पड़े हुए, खुरदरे फ़्लैनल के टुकड़े की बुनावट के साथ कुछ देर तक अन्यमनस्क सी खेलती रही और फिर एकाएक उसे समेट कर अन्दर रख लिया। दूसरे ही क्षण से मैं उनका पालतू बन गया – अम्मा की आँखों का तारा। प्यारे पाठक, क्या कभी आपका पाला किसी दो सौ पौंड वजन वाली भारी भरकम महिला से पड़ा है, जो अनेक प्रकार की दुर्गन्धियों से युक्त अपनी नाक को आपके पूरे शरीर पर रगड़ती हुई, एमा ईम्स जैसी आवाज में आपको अपना प्यारा, दुलारा, आँखों का तारा कहती रहे।

नस्लजात पीले पिल्ले से बढ़ कर मैं एक अज्ञात कुलशील पीला कुत्ता बना जो किसी अँगोरा बिल्ली और नींबू के टोकरे की वर्णसंकर सन्तान जैसा दिखाई पड़ता था। परन्तु मेरी मालकिन अपनी बात पर अड़ी रही। उनकी राय में तो महाप्रलय के समय नोहा ने अपनी नाव में जिन दो आदिम कुत्तों को धकेला था, वे मेरे ही गोत्र के पूर्वज थे। मैडिसन चौक के बाग में होने वाली साइबेरियन शिकारी कुत्तों की प्रदर्शनी में मुझे दाखिल कराने से उन्हें रोकने के लिए दो पुलिस के सिपाहियों की जरूरत पड़ी।

अब मैं उस फ़्लैट का जरा वर्णन कर दूँ। न्यूयार्क का एक साधारण-सा मकान, जिसके दीवानखाने में संगमरमर और ऊपर की मंजिलों के कमरों में साधारण पत्थर बिछे हुए। हमारा फ़्लैट तीन मंजिल नहीं, तीन जीने चढ़ कर था। मेरी मालकिन ने उसे बिना फर्नीचर ही किराये पर लिया था और उसे औपचारिक चीजों से सजाया – जैसे सन् १९०३ का बना, पुराना, चमड़े से मँढ़ा फर्नीचर, हार्लेम के चायघर में बैठी हुई जापानी वेश्याओं का तैल चित्र, कुछ पौधे और एक पतिदेव।

भगवान की कसम, दो पैरों वाले इस निरीह प्राणी से मुझे बहुत हमदर्दी थी। वह भूरे बालों वाला एक छोटा-सा आदमी था और उसकी मूँछें कुछ मेरे ही समान थीं। जोरू का गुलाम? अजी, उसकी हालत तो इससे भी बदतर थी। वह बर्तन मलता और दूसरी मंजिल पर रहने वाली, गिलहरी के फर का कोट पहिनने वाली पड़ौसिन के तार पर सूखने को डाले हुए कपड़ों की जर्जरता और सस्तेपन के सम्बन्ध में मालकिन की

बकवास सुनता। प्रतिदिन शाम को जब मालकिन खाना बनाती, तब वह मुझे एक डोरी से बाँध कर घुमाने ले जाने को उसे बाध्य करती।

यदि मनुष्य को यह मालूम हो जाय कि अकेली रहने पर औरतें अपना समय कैसे व्यतीत करती हैं, तो वह कभी विवाह न करे। सस्ते उपन्यास पढ़ना, मूँगफली की गुड़धानी खाना, गर्दन पर बदामरोगन की मालिश करना, बर्तनों को बिना माँजे छोड़ देना, आध घण्टे तक बर्फ बेचने वाले से तेरी-मेरी करना, पुरानी चिट्ठियों को पढ़ना, थोड़े से सिरके के साथ जौ की शराब पीना, घण्टों तक खिड़की की दरार में से पड़ौस के मकान में झाँकना—यही मालकिन की दिनचर्या होती थी। पति के आने से बीस मिनट पहले, वह घर को ठीकठाक करती और दस मिनट तक सिलाई करने का स्वांग भरती।

मैं उस फ़्लैट में एक कुत्ते का जीवन व्यतीत करता था। लगभग पूरा दिन मैं अपने कोने में पड़ा हुआ उस औरत को समय बरबाद करते देखा करता। कभी कभी मुझे झपकी लग जाती और मैं तहखानों में बिल्लियों का पीछा करने के या दस्ताने पहिने बुढ़ियाओं के सामने गुर्राने के सुनहरे सपने देखा करता, जैसा एक कुत्ते को करना भी चाहिये। तब वह मुझ पर खुशामद के शब्दों की बौछार करती हुई, मुझे चूमने लगती; परन्तु मैं कर ही क्या सकता था? कुत्ता अपने मुँह में लौंग इलायची तो रख नहीं सकता।

ईमान से कहता हूँ मालिक के साथ मुझे दिली हमदर्दी थी। हम दोनों की शकलों में इतनी समानता थी कि बाहर निकलने पर लोग इस पर ग़ौर करते, इसलिए राजमार्ग को छोड़ कर हम गरीबों की बस्तियों से गुजरने वाली सड़क पर पिछले दिसम्बर में पड़ी बर्फ खूँदा करते।

एक दिन शाम को जब हम इसी प्रकार घूम रहे थे और जब मैं ऊँची नस्ल के बढ़िया कुत्ते की तरह दिखने का प्रयत्न कर रहा था और बुढ़ऊ भी कुछ रंग में थे (क्योंकि अक्सर उनकी मनस्थिति विवाह मंत्र बोलने वाले पण्डित मात्र की हत्या करने जैसी रहती थी) तब मैंने उनकी ओर देखते हुए कहा :

"अरे पालतू केंकड़े, मुँह क्यों लटका रखा है? मालकिन तुझे चूमती तो नहीं। कम से कम तुझे उसकी गोद में बैठ कर ऐसी बकवास तो नहीं सुननी पड़ती जिसके सुनने के बाद संगीत भी गणित के सिद्धान्त सा

नीरस लगे। खैर मना, कि तू कुत्ता नहीं है। कमर कस और उदासी को दूर भगा।"

विवाह रूपी दुर्घटना में घायल, उस वीर ने मेरी ओर लगभग कुत्ते के ही समान चतुराई भरी नजरों से देखा।

वह बोला, "भई कुतुवा! प्यारे कुत्तू! तू तो लगभग मनुष्य के समान ही बोल लेता है! क्या कहना चाहता है? क्या बिल्लियों—"

"बिल्लियों? लगभग बोल लेता है—हुँ!"

लेकिन मेरी बात वह समझा नहीं। पशुओं की भाषा से बिचारा मनुष्य एकदम वंचित है। मनुष्य और कुत्तों के बीच बातचीत का समान स्तर केवल किस्से-कहानियों में ही हो सकता है।

सामने के कमरे में एक औरत रहती थी, जिसके पास एक चितकबरा टैरियर जाति का कुत्ता था। हर शाम को उसका पति कुत्ते को घुमाने ले जाता परन्तु वह तो हमेशा सीटी बजाता हुआ खुश-खुश वापिस लौटता। एक दिन नीचे की मंजिल पर मैंने उस कुत्ते से दुआसलाम की और उससे इस बात का रहस्य पूछा।

मैंने कहा, "ओ छैला, यह तो तुम्हें भी मालूम होगा कि चार आदमियों के बीच में कुत्ते की धाय का पार्ट अदा करना कोई भी आदमी पसन्द नहीं करेगा। यदि उसे ऐसा करना पड़े तो उसकी तरफ देखने वाले हर आदमी को वह कच्चा ही चबा जाने की कोशिश करेगा। परन्तु तेरा मालिक तो रोज शाम को, अण्डों का तमाशा दिखाने वाले किसी ढीठ बाजीगर की तरह झूमता चलता है। इसका राज क्या है? मुझे मत बता कि उसे यह पसंद है।"

चितकबरा बोला, "आसान-सी बात है। वह तो अंगूर की बेटी का सेवन करता है और वह भी बेरहम हो कर। जब हम शाम को घूमने निकलते हैं, तब शुरू में तो वह इतना संकोची होता है, जैसे स्टीमर में जुआ खेलने वालों के झुण्ड में कोई रोगी आदमी। लेकिन कोई आठ मयखानों के चक्कर लगाने के बाद वह इस बात की भी परवाह नहीं करता कि हाथ में की डोरी के दूसरे सिरे पर कुत्ता बँधा है या मछली! मयखानों के चक्करदार दरवाजों से बचते बचते मेरी पूँछ भी दो इंच कट चुकी है।" उस कुत्ते से यह संकेत पा कर मैं सोच में पड़ गया (नौटंकी वाले इसे नोट कर लें)।

एक दिन शाम को करीब छः बजे मेरी मालकिन ने मालिक को तैयार हो कर 'लवी' को हवाखोरी के लिए ले जाने का आदेश दिया। मैंने अब तक आपसे छिपाये रखा, लेकिन मालकिन मुझे इसी नाम से पुकारती थी। चितकबरे का नाम 'मिट्ठू' था। यों तो मैं उससे कई गुना श्रेष्ठ था, परन्तु इस नाम के बोझ ने मेरे आत्मसम्मान पर एक कलंक-सा लगा दिया था।

एक सुरक्षित और शान्त गली में, एक आकर्षक और साफसुथरे मयखाने के सामने मैं अड़ गया और आँखें मींचे, बदहवास, दरवाज़े में घुस कर इस तरह कराहने लगा जैसे अखबारों के समाचारों में पहाड़ी कुत्ते अक्सर फूल तोड़ते तोड़ते बर्फ के गढ़े में फँसी हुई किसी लड़की की सूचना उसके परिवार को देते समय चीखते हैं।

खींसे निपोरता हुआ बूढ़ा बोला, "सत्यानाश हो इसका! यह कुत्ते का बच्चा कहीं शराब पीने को तो नहीं ले जा रहा है? वाकई, जरा देखूँ तो! आराम से बैठ कर शराब पिये भी कितने दिन बीत गये! चलूँ तो सही..."

स्पष्ट था कि मछली काँटा निगल गयी। टेबल पर बैठ कर उसने व्हिस्की के कई जाम चढ़ाये। घण्टे भर तक दौर चलते रहे। मैं उसके पास बैठा, वेटर के लिए पूँछ हिलाता रहा और मुफ्त का खाना खाता रहा। यह खाना उससे कहीं अच्छा था जो मालकिन, मालिक के आने से आठ मिनट पहले, पड़ौस के भटियारखाने से मँगवाती थी; पर रौब ऐसा दिखाती थी जैसे उसने घर पर ही बनाया हो।

जब स्काटलैण्ड की बनी वह सारी शराब समाप्त हो गयी और टेबल पर सिर्फ जौ की रोटी बची, तब उसने मुझे टेबल के पाये से खोल दिया और मुझे इस तरह नचाने लगा जैसे कुशल मछुआ फँसी हुई मछली को डोरी से नचाता है। बाहर आते ही उसने मेरे गले का पट्टा खोल कर फेंक दिया। फिर वह बोला, "प्यारे कुतुवा, मेरे प्यारे अच्छे कुत्तू! तुझे अब वह कभी नहीं चूम सकेगी! बड़ी शर्म की बात है। इससे तो अच्छा है कि जा और किसी बड़ी मोटर के नीचे दब मर।"

परन्तु मैंने जाने से इन्कार कर दिया। मैं उस बूढ़े के पाँवों के चारों ओर उछलने-कूदने लगा।

मैंने उससे कहा, "अरे अहसान-फरामोश, बेवकूफ, नासमझ, मुर्गीचोर, हरामजादे! क्या तू यह भी नहीं समझता कि तुझे छोड़ कर मैं

जाना नहीं चाहता ! क्या तू नहीं जानता कि हम दोनों, जंगल में भटके हुए दो पिल्लों के समान हैं और मालकिन हमारे पीछे निर्दय भेड़िये की तरह पड़ी हुई है – तेरे पीछे बर्तन पोंछने का तौलिया ले कर और मेरे पीछे पिस्सू मारने की दवा और पूँछ में बाँधने का गुलाबी रिबन ले कर। इन सारी झंझटों को काट कर सदा के लिए क्यों न दोस्त बन जावें !"

आप कहेंगे कि उसकी समझ में मेरी बात नहीं आयी। शायद नहीं भी आयी हो। परन्तु उसकी नसों में व्हिस्की अपना असर दिखा चुकी थी। एक क्षण तक वह विचार करता हुआ चुपचाप खड़ा रहा और अन्त में बोला :

"प्यारे कुत्तू ! संसार में आकर एक दर्जन से ज्यादा ज़िन्दगियाँ तो हमें मिलती नहीं और तीन सौ वर्ष से अधिक जीवित भी कम लोग ही रहते हैं। अगर दुबारा उस फ्लैट का मुँह देखूँ तो मुझ पर लानत और अगर तू देखे तो तुझ पर सात बार लानत है। मैं शर्त लगाता हूँ कि 'वेस्टवर्ड हो' नाम का घोड़ा जरूर रेस जीतेगा।"

आज डोरी का बन्धन तो था नहीं। आनन्द से उछलता – कूदता मैं और मेरा मालिक २३ वीं सड़क के उस पार खड़ी नाव पर जा पहुँचे और मार्ग में मिलनेवाली बिल्लियों ने भगवान का शुक्र माना कि उसने उनको नाखून वाले पंजे दे दिये।

जरसी के निकट पहुँच कर मेरे मालिक ने एक अजनबी से कहा, "मैं और मेरा कुत्ता, राकी पहाड़ पर सैर करने जा रहे हैं।" –

परन्तु मुझे सबसे अधिक आनन्द तब हुआ, जब मेरे मालिक ने मेरे कान इतनी जोर से खींचे कि मैं दर्द से कराहने लगा और तभी वह बोल उठा ;

"अबे, बन्दर की शकल, चूहे-सी पूँछ वाले, बछिया के ताऊ ! तुझे मालूम है मैं तुझे आज क्या कह कर पुकारने वाला हूँ ?"

मैंने सोचा कि यह भी मुझे 'लबी' कहेगा और इस विचार से मैं निराश हो कर बिलबिलाने लगा।

मेरा मालिक बोला, "मैं तुझे 'रफीक' कह कर पुकारूँगा।" और यह सुन कर मुझे इतना आनन्द हुआ कि यदि मेरे पाँच पूँछें होतीं और मैं उन सब को हिलाता तो भी उस अवसर के आनन्द को व्यक्त नहीं कर सकता था।